शब्द–ब्रह्म
ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 मार्च 2013

# कौटिल्य की राष्ट्रीय सुरक्षा नीति का वर्तमान परिपेक्ष्य में मूल्यांकन

उमा अरमो
शोधार्थी, इतिहास विभाग
शासकीय मानकुंवर बाई कला एवं वाणिज्य महिला महाविद्यालय,
जबलपुर, म.प्र.

## शोध संक्षेप

*प्राचीन भारत के महान राजनीतिज्ञ, दार्शनिक, कूटनीतिज्ञ एवं युद्धविद्या के प्रकाण्ड पंडित आचार्य कौटिल्य ने अपनी सुप्रसिद्ध कृति अर्थशास्त्र में राष्ट्रीय सुरक्षा से जुड़े विभिन्न प्रकार के विपत्ति अथवा खतरे का विस्तारपूर्वक उल्लेख किया है। सदियों बाद भी उनके द्वारा प्रतिपादित विचार प्रासंगिक एवं जीवंत है। आज से लगभग 2300 साल पहले जिस वृहत एवं विशाल प्राचीन भारत की स्थापना कौटिल्य व उनके शिष्य चन्द्रगुप्त मौर्य ने की थी, उसके पीछे निःसन्देह एक सुदृढ़ राष्ट्रीय सुरक्षा नीति रही है। प्रस्तुत शोध पत्र में कौटिल्य के राष्ट्रीय सुरक्षा नीति का वर्तमान परिपेक्ष्य में मूल्यांकन किया गया है।*

**प्रस्तावना–**

मगध भारतीय इतिहास का अति प्राचीन नाम है। ऐतिहासिक ग्रन्थों में मगध भूमि एवं वंश की चर्चा उल्लेखित है। स्रोतों से यह ज्ञात होता है कि कौटिल्य ने अपने शिष्य चन्द्रगुप्त मौर्य की सहायता से तत्कालीन मगध के अति शक्तिशाली नन्द वंश को नष्ट कर तथा उसी समय यूनानी राजा सिकन्दर महान के भारत पर प्रथम आक्रमण 326 ईसा पूर्व में विजय के बाद भारत में साम्राज्य विस्तार के सभी प्रयासों को विफल करते हुए अखण्ड भारत के निर्माण हेतु 321 ईसा पूर्व में मौर्य साम्राज्य की स्थापना की। कौटिल्य एक विलक्षण बहुमुखी प्रतिभा सम्पन्न व्यक्ति था जिसकी स्पष्ट झलक उसकी महानतम कृति अर्थशास्त्र में दिखाई देती है। उन्होंने विदेश नीति, सुरक्षा नीति एवं अर्थ नीति इत्यादि के विषय में विस्तार पूर्वक वर्णन किया है। कौटिल्य ने राज्य के आवश्यक सात अंग में से सेना को एक अंग माना है। उनके अनुसार न केवल राज्य की एकता व अखण्डता तथा शान्ति एवं सुरक्षा के लिए अपितु राजनीतिक, आर्थिक एवं सामाजिक ढांचे के कुशल संचालन हेतु भी एक अनुशासित एवं स्थाई सेना की आवश्यकता होती है। शक्तिशाली राज्य की स्थापना का आधार मजबूत एवं कुशल सेना है। राष्ट्रीय सीमाओं की सुरक्षा पर ही आन्तरिक शान्ति व सुरक्षा निहित है। कौटिल्य द्वारा विदेश नीति पर आधारित प्रसिद्ध मण्डल सिद्धान्त के मूल में सुरक्षा के भाव निहित है। तो वहीं षाड्गुण्य नीति के माध्यम ये राजा को अपनी शक्तियों के क्रियान्वयन के बारें में दिशानिर्देश हैं। प्राचीन इतिहास में राज्य की सुरक्षा के लिए एक व्यवस्थित एवं स्पष्ट समग्र नीति का अभाव दिखाई देता है, उन्होंने राष्ट्रीय सुरक्षा सम्बन्धी सिद्धान्तों की स्थापना कर राज्य की सुरक्षा हित के संदर्भ में एक न केवल विशिष्ट मार्गदर्शन प्रदान किया अपितु सुरक्षा चिंताओं के बारें में भी आगाह किया है। वैज्ञानिक एवं तकनीकी विकास के वर्तमान दौर में राज्य, राजा, जनता तथा शासन व्यवस्था इत्यादि में कई आमूल–चूल परिवर्तन हुए हैं। सुरक्षा खतरे व चुनौतियों में भी बदलाव आया है जो स्वाभाविक हैं।

बावजूद इसके वर्तमान समय में राष्ट्रीय या अन्तर्राष्ट्रीय पटल पर जो सुरक्षा विपत्ति या खतरे दिखाई दे रहें हैं उनका मूल स्वरूप ठीक वैसा ही है जैसा आचार्य कौटिल्य ने इंगित किया है। अर्थात कौटिल्य द्वारा बताये राष्ट्रीय सुरक्षा खतरों का वर्तमान राष्ट्रीय सुरक्षा से प्रत्यक्ष या परोक्ष सामयिक सम्बंध है जिसका तर्कसंगत व्यावहारिक मूल्यांकन करना आवश्यक है।

**शोध प्रविधि**

प्रस्तुत शोध पत्र के प्रथम चरण में कौटिल्य के संक्षिप्त जीवन परिचय, उनकी कृति अर्थशास्त्र का रचनाकाल, तत्कालीन राजनीतिक स्थिति एवं दूसरे चरण में उनके द्वारा प्रतिपादित राष्ट्रीय सुरक्षा खतरे एवं वर्तमान राष्ट्रीय सुरक्षा के संदर्भ में मूल्यांकन पर प्रकाश डाला है। अन्तिम चरण में निष्कर्ष हैं। उक्त शोध पत्र को तैयार करने हेतु पुस्तकालय एवं सर्वेक्षण विधि की मदद ली गई है।

**कौटिल्य का संक्षिप्त परिचय**

कौटिल्य के जीवन के सम्बन्ध में सुनिश्चित जानकारी प्राप्त नहीं होती। स्वयं कौटिल्य ने इस सम्बन्ध में कोई जानकारी नहीं दी है। किन्तु यह माना जाता है कि कौटिल्य का जन्म लगभग 350 ईसा पूर्व प्राचीन भारत की प्राचीनतम नगरी तक्षशिला में एक निर्धन ब्राह्मण परिवार में हुआ था।[1] पिता द्वारा प्रदत्त वास्तविक नाम विष्णु गुप्त था। जिसका रहस्योद्घाटन आचार्य कामान्दक के नीतिसार से हुआ। कुटिल गोत्र का वंशज होने के कारण अर्थशास्त्र के प्रणेता को कौटिल्य कहा गया।[2] कौटिल्य की ख्याति अनेक नामों से है उनका एक अन्य लोकप्रिय नाम चणक पुत्र होने के कारण चाणक्य दिया गया। कुशाग्र एवं कुटिल राजनीतिज्ञ होने के सम्मान से कौटिल्य नाम पड़ा। अतः चाणक्य एवं कौटिल्य उसके वंश अथवा उपाधि नाम हैं। वे तत्कालीन समय में न केवल प्राचीन भारत बल्कि विश्व के सर्वश्रेष्ठ शिक्षा के केन्द्र तक्षशिला में कूटनीति एवं युद्धशास्त्र का अध्यापन कराते थे।

**अर्थशास्त्र का रचनाकाल**

कौटिल्य के रचनाकाल की ओर संकेत करते हुए डॉ. शाम शास्त्री लिखते हैं कि भारतीय शिलालेखों में की गयी खोंजो से पता चलता है कि चन्द्रगुप्त को 321 ई.पू. राजा बनाया गया था और अशोकवर्धन 296 ई.पू. राजसिंहासन पर बैठा था। इससे निष्कर्ष निकलता है कि कौटिल्य ने अर्थशास्त्र की रचना 321 और 300 ई.पू. के मध्य की।[3] सर्वप्रथम 1905 में दक्षिण भारत के तंजौर जिला निवासी एक ब्राह्मण ने मैसूर गवर्नमेंट प्राच्य पुस्तकालय में कौटिल्य अर्थशास्त्र की एक हस्तलिखित प्रति भेंट की। पुस्तकालय के तत्कालीन अध्यक्ष शाम शास्त्री ने इस प्रति का सूक्ष्म अध्ययन करके इसका प्रथम संस्करण 1909 में प्रकाशित किया और पुस्तक के साथ प्राप्त भट्टस्वामी की आंशिक टीका के आधार पर 1915 में इसका अंग्रेजी अनुवाद भी प्रकाशित किया।[4] काणे के अनुसार – अर्थशास्त्र में कुल 15 अधिकरण, 150 अध्याय, 180 विषय एवं 6000 श्लोक हैं।[5]

**तत्कालीन राजनीतिक स्थिति**

ऐतिहासिक ग्रन्थों से पता चलता है कि मगध में नन्द वंश (344 –322 ई.पू.) का शासन था जिसकी राजधानी पाटलीपुत्र थी।[6] मगध प्राचीन भारत की राजनीतिक, आर्थिक एवं सैन्य शक्ति के केन्द्र के रुप में स्थापित थी। तत्कालीन समय में भारत की राजनीतिक स्थिति अच्छी नहीं थी और सम्पूर्ण भारत में छोटे– छोटे अनेक जनपद अस्तित्व में थे। जो आपसी स्वार्थ एवं राज्य के विस्तार के लिए परस्पर लड़ते रहते थे। यह किसी बाहरी

आक्रान्ता के लिए सबसे अनुकूल समय था जिसका पूरा फायदा उठाते हुए महान यूनानी सम्राट सिकन्दर ने झेलम नदी को पार कर भारत पर आक्रमण कर दिया। पुरु राज्य के राजा पोरस को छोड़ अन्य किसी राज्य के राजाओं ने सिकन्दर के आक्रमण को भारत पर आक्रमण के रूप में नहीं देखा अपितु उस समय भी आपसी वैमनस्य एवं शत्रुता दिखाते हुए सिकन्दर की सैनिक एवं आर्थिक दृष्टि से भरपूर मदद की।

**राष्ट्रीय सुरक्षा सिद्धान्त**

जिन प्राचीन भारतीय ऐतिहासिक ग्रन्थों में राष्ट्र की सुरक्षा की अवधारणा को प्रमुखता से प्रतिपादित किया गया है उनमें कौटिल्य का अर्थशास्त्र प्रमुख है। अर्थशास्त्र एकमात्र ऐसा ग्रन्थ है जिसमें सैन्य संगठन, सेनाओं के प्रकार, भर्ती व्यवस्था, प्रशिक्षण, वेतन व्यवस्था, अस्त्र–शस्त्र, गुप्तचर व्यवस्था, दुर्ग व्यवस्था, युद्ध शिविर, शत्रु के प्रकार, युद्ध के कारण एवं प्रकार आदि राज्य की सैन्य एवं सुरक्षा व्यवस्था पर विस्तृत व्याख्या की गई है। जिसे समग्र रूप में उसमें वर्णित सिद्धान्तों को हम कौटिल्य के युद्ध एवं सैन्य दर्शन के रूप में दर्शाते हैं। प्लिनी के अनुसार उसकी सेना में 6,00000 पैदल, 30,000 घुड़सवार, 9,000 हाथी एवं 8,000 रथ थे। यह विशाल सेना एक नियमित स्थायी सेना थी जिसके हर सैनिक को राज्य की तरफ से वेतन एवं युद्ध का सभी आवश्यक सामान मिलता था।[7] कौटिल्य द्वारा प्रतिपादित मण्डल सिद्धान्त का मूल उद्देश्य राज्यों के बीच के सम्बन्धों का सूक्ष्म एवं यथार्थ वर्णन तथा शक्ति संतुलन बनाये रखने और राष्ट्रीय सुरक्षा के निमित्त व्यवहारिक सम्बन्धों का अध्ययन करना है।[8] विदेश नीति और सुरक्षा नीति एक–दूसरे के पूरक हैं। विदेश नीति के छः अंग सन्धि, विग्रह, आसन, यान, संश्रय तथा द्वैधी भाव बताए गए हैं और इन नीतियों के क्रियान्वयन करने हेतु साम, दाम, भेद और दण्ड नामक चार उपाय सुझाए हैं।[9]

**राष्ट्रीय सुरक्षा में खतरे**

आचार्य कौटिल्य ने राजा के प्रति राज्य के दो प्रकार के कोप बताये हैं– आभ्यान्तर और बाह्य। इनके अनुसार आभ्यान्तर कोप घर में रहने वाले सांप की तरह है जो बाह्य कोप से अधिक अनर्थकारी होता है।[9] अर्थशास्त्र में राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए उत्पन्न होने वाले खतरों के बारे में विस्तृत चर्चा की है।[11]

**पहला खतरा**

विदेशी राष्ट्र प्रमुख तथा विदेश सेनापति आदि लोगों द्वारा उत्पन्न और अपने देश के मंत्री, सेनापति, पुरोहित आदि द्वारा प्रोत्साहित राष्ट्रीय विपत्ति

**दूसरा खतरा**

बाह्य लोगों द्वारा उत्पन्न और उन्हीं के द्वारा प्रोत्साहित

**तीसरा खतरा**

स्वयं के लोगों द्वारा उत्पन्न एवं बाह्य लोगों द्वारा प्रोत्साहित विपत्ति

**चौथा खतरा**

आन्तरिक रूप से उत्पन्न और उन्हीं के द्वारा प्रोत्साहन

**उपरोक्त खतरों का वर्तमान राष्ट्रीय सुरक्षा के परिपेक्ष्य में मूल्यांकन**

राष्ट्रों के जीवन में विपत्ति एक स्थाई तत्व है। देश, काल एवं परिस्थिति के अनुरूप उसके प्रारूप, प्रकृति एवं स्वभाव में कम–अधिक परिवर्तन हो जाता है। कौटिल्य द्वारा प्राचीन युग में वर्णित उपर्युक्त खतरों को यदि वर्तमान संदर्भ में आंकलित करने का प्रयास किया जाता है तो यह बात हास्यास्पद लग सकती है किन्तु सीधा एवं सपाट सत्य यह है कि देश की सुरक्षा के खतरों का

स्वरूप भले ही बदल गया हो, किन्तु उसकी प्रवृति में लेशमात्र भी परिवर्तन नहीं हुआ है।[12]

**पहला खतरा**

रक्षा सौदों में व्याप्त भ्रष्टाचार में जिस तरह से अपने ही देश के जिम्मेदार पदों पर पदस्थ मंत्री, अधिकारी एवं विदेशी एजेंट जिसमें हथियारों के दलाल, आपूर्तिकर्त्ता कम्पनी या वहां पर उच्च पद पर काबिज व्यक्ति लिप्त पाये जा रहे हैं, वह न केवल देश की रक्षा क्षमता को कमजोर करने वरन राष्ट्र को सामरिक दृष्टि से एक बड़ा प्रतिघात है। चूंकि भारत अपनी रक्षा जरूरतों का 70 फीसदी से अधिक रक्षा सामान विदेश से खरीदता है इसलिए यहां भ्रष्टाचार की सबसे अधिक सम्भावनाएं हैं। इससे देश की सेना का मनोबल गिरता है तथा युद्ध के मार्चे पर रक्षा उपकरणों पर संशय भी बना रहता है। जिस तरह से स्वतंत्रता के बाद रक्षा खरीद में दलाली, जालसाजी इत्यादि के प्रकरण आये हैं वह इसकी स्वतः पुष्टि करते हैं। कुछ प्रमुख रक्षा घोटाले निम्न हैं[13] –

सेना के लिए जीप व रायफल घोटाला, सन् 1948, राशि– 30 करोड़, तत्कालीन ब्रिटिश उच्चायुक्त बी.के.मेनन जो जवाहर लाल नेहरू के करीबी थे।

बोफोर्स तोप घोटाला, सन् 1986, राशि– 68 करोड़, इटली के ओट्टाविया क्वात्रोची व भारत के विन चढ्ढा, हिन्दुजा बन्धु।

एच.डी.डब्लू.पनडुब्बी घोटाला, सन् 1987, राशि– 10 करोड़, तत्कालीन प्रधानमंत्री राजीव गांधी।

ताबूत खरीद घोटाला, स्न 1999, राशि– 47 करोड़, तत्कालीन रक्षामंत्री जार्ज फर्नांडीज।

**दूसरा खतरा**

कौटिल्य द्वारा बताये इस सुरक्षा खतरे के अन्तर्गत सीमा पार आतंकवाद तथा शरणार्थी समस्या को लिया जा सकता है। कश्मीर को प्राप्त करने की मंशा संजोये पाकिस्तान, भारत से पिछले चार युद्ध सन् 1947–48, 1965, 1971 एवं 1999 में प्रत्यक्ष युद्ध में पराजित होने के बाद अप्रत्यक्ष रूप से भारत को अस्थिर करने के लिए आतंकवाद का सहारा ले रहा है। आतंकीयों को अपनी सरजमीं में पूर्ण प्रशिक्षणोपरान्त अस्त्र–शस्त्र देकर कभी जम्मू–कश्मीर के रास्ते तो कभी नेपाल, बंग्लादेश सीमा के रास्ते भारत में घुसपैठ कराता है। राज्य प्रेरित आतंकवाद का सबसे ज्यादा शिकार भारत रहा है। भारतीय संसद पर हमला 2003, मुम्बई लोकल ट्रेनों में सीरियल बम ब्लास्ट 1993, 26 नवम्बर 2009 मुम्बई आतंकवादी हमला इत्यादि दर्जनों छोटे–बड़े हमलों में हजारों मासूमों की जानें जा चुकी हैं। आतंकवाद भारतीय राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए गम्भीर खतरा बना हुआ है।

**तीसरा खतरा–**

वर्तमान परिपेक्ष्य में इस श्रेणी के अन्तर्गत नक्सलवाद, नकली मुद्रा, अवैध हथियार व मादक पदार्थों का व्यापार, मानव तस्करी इत्यादि को शामिल किया जा सकता है। आज देश का लगभग 40 प्रतिशत भू–भाग, 13 बड़े राज्य, 270 जिले एवं लगभग 35 प्रतिशत जनसंख्या नक्सलवाद की चपेट में हैं। प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह ने नक्सलवाद को आन्तरिक सुरक्षा के लिए सबसे बड़ा खतरा बताया है।[14] नक्सलियों के पास आधुनिक हथियार व गोला–बारूद एवं अन्य साजो–सामान की सतत् आपूर्ति नेपाल व बंग्लादेश के रास्ते होती है। भारत में जाली नोटों का संचालन पड़ोसी देशों से होता है। लोकसभा में मंत्री अजय माकन से पूछा गया कि क्या सरकार ने भारी संख्या में जाली मुद्रा की बरामदगी को देखते हुए इसके स्रोत और उद्गम का पता लगाने के लिए कोई प्रयास किये हैं ? इस सवाल के जवाब में माकन ने

कहा कि उपलब्ध जानकारी दर्शाती है कि उच्च गुणवत्ता की जाली भारतीय मुद्रा के नोट पड़ोसी देश में छापे गये हैं और पड़ोसी देशों के माध्यम से भारत में भेजे गये हैं। उन्होंने कहा कि जानकारी यह भी दर्शाती है कि लश्कर–ए–तोयबा के आतंकवादी संगठित आपराधिक तंत्र और सिंडीकेट देश में जाली भारतीय मुद्रा के नोटों को भेजने तथा परिचालित करने में कथित रुप से शामिल हैं। एक ताजा रिपोर्ट के अनुसार नकली मुद्रा भारत के लिए चिंता का विषय बनती जा रही है। माना जा रहा है कि नकली नोट पाकिस्तान में छपकर ढाका व बैंकाक के रास्ते काठमांण्डू लाया जाता है फिर वहां से भारत के विभिन्न हिस्सों में पहुंचाया जाता है।[15]

**चौथा खतरा**

इसके अन्तर्गत आन्तरिक सुरक्षा के सभी खतरे शामिल हैं। जातिवाद, क्षेत्रीयता अथवा प्रादेशिकता, भाषावाद, जनजातीय विद्रोह, साम्प्रदायिकता, निर्धनता, बेरोजगारी की समस्या, श्रम विवाद, नक्सली हिंसा, उग्रवाद, भ्रष्टाचार इत्यादि राष्ट्रीय सुरक्षा के समक्ष गंभीर एवं चिंतनीय समस्या हैं।

**निष्कर्ष**

राष्ट्रीय सुरक्षा के संदर्भ में आचार्य कौटिल्य ने गहन अध्ययन, मनन व दूरदर्शी चिंतन तथा अपने अनुभवों के आधार पर अपनी कृति अर्थशास्त्र में जिस प्रकार के विपत्ति अथवा खतरे का जिक्र किया है वहीं खतरे सदियों बाद भी आज भारत के समक्ष मौजूद हैं, बस उनकी प्रकृति, स्वभाव एवं प्रारूप में अन्तर आ गया है जो स्वभाविक है। प्राचीन भारत के महान स्वप्नद्रष्टा कौटिल्य की राष्ट्रीय सुरक्षा नीति सम्बंधी सिद्धान्त आधुनिक समय में भी प्रासंगिक हैं। दुर्भाग्य है कि 8वीं शताब्दी के आरम्भ से और उसके पश्चात कौटिल्य द्वारा प्रतिपादित सुरक्षा सिद्धान्तों को एक सिरे से भुला दिया गया, जिसके कारण भारत पर एक के बाद एक लगातार कई विदेशी आक्रमण हुए। सुरक्षा हित के तत्वों के प्रति भारतीय नेता कभी उस दृष्टि से नहीं सोच पाये जैसे आचार्य श्री ने सुझाये थे। राष्ट्रीय सुरक्षा के आन्तरिक एवं बाह्य मोर्चे पर उपस्थित चुनौतियों एवं खतरे से लड़ने की क्षमता एवं सामर्थ्य हासिल करने के अलावा उनसे निपटने की दृढ़ प्रतिबद्धता एवं निष्ठा की नितान्त आवश्यकता है। कौटिल्य के राष्ट्रीय सुरक्षा सम्बन्धी विचारधारा आज भी प्रासंगिक, अर्थपूर्ण एवं व्यवहारिक है।

**संदर्भ–**

1. जायसवाल, रामकृष्ण –भारतीय राजनीतिक विचारक, संस्करण 2007, शेखर प्रकाशन, इलाहाबाद, पृष्ठ–44
2. अग्रवाल, कमलेश – कौटिल्य अर्थशास्त्र एवं शुक्रनीति की राज्य व्यवस्थाएँ, संस्करण –2001, राधा पब्लिकेशंस, नई दिल्ली, पृष्ठ–19
3. पूर्वोक्त संदर्भ –2, पृष्ठ–21
4. प्रो. इन्द्र –कौटिल्य अर्थशास्त्र, संस्करण –2003, राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली, पृष्ठ–03
5. पूर्वोक्त संदर्भ –1, पृष्ठ–45
6. सिंह, डॉ.सरदार – सामान्य अध्ययन, भारतीय इतिहास, संस्करण– 2000, साहित्य भवन पब्लिकेशंस आगरा, पृष्ठ– ठ19
7. गुप्ता, मेजर धनपाल – सरल सैन्य अध्ययन, संस्करण 1976–77, रस्तोगी पब्लिकेशन्स, मेरठ, पृष्ठ–38
8. पूर्वोक्त संदर्भ –1, पृष्ठ–69
9. पूर्वोक्त संदर्भ –7, पृष्ठ–36
10. पूर्वोक्त संदर्भ –2, पृष्ठ–194
11. जैन,श्रीमती पुष्पा –सम्पूर्ण सैन्य विज्ञान–2, विश्वविद्यालय प्रकाशन, ग्वालियर, पृष्ठ–73
12. पूर्वोक्त संदर्भ – 9, पृष्ठ–73
13. संजय – आंतरिक सुरक्षा के गम्भीर खतरे, तूणीर, अंक–13, रक्षा अध्ययन शोध समिति, गोरखपुर, पृष्ठ– 16–17

14. पाण्डे, डॉ. गिरिश कान्त – छत्तीसगढ़ में नक्सली आतंकः विश्लेषणात्मक अध्ययन, नक्सलवाद के मुकाबले का जन आन्दोलनः सलवा जुडुम, रामभाऊ म्हालगी प्रबोधनी, सस्करण–1, पृष्ठ–13
15. निगम, राजेन्द्र कुमार – भारतीय आन्तरिक सुरक्षा पर आर्थिक आक्रमणः नकली नोट, तूणीर, अंक–14, रक्षा अध्ययन शोध समिति, गोरखपुर, पृष्ठ– 97